पाठ–वह तोड़ती पत्थर

मूल प्रतिपाद्यः

निराला छायावादी कवि हैं। उन्होंने 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में मजदूरनी के माध्यम से भारतीय समाज में विद्यमान आर्थिक विषमता को उजागर किया है। कवि की दृष्टि मजदूरनी पर गई है ,जो इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती है। वह छायाहीन पेड़ के नीचे बैठ कर भारी हथौड़े से बार–बार पत्थर पर प्रहार करती है। उसका रंग सांवला है। उसके सामने वृक्षों से घिरा हुआ महल है जिसके चारो ओर चहारदिवारी है। मजदूरनी बाध्य होकर कठिन काम को करती है।

कवि निराला मजदूरनी के साथ–साथ प्रकृति के कठोर रूप का वर्णन करते हैं।ग्रीष्म ऋतु और दोपहर का समय है। धरती से आसमान की ओ आग की लपटे उठती हैं पर मजदूरनी का मन पत्थर तोड़ने के काम में लीन रहता है। वह जब महल और कवि की ओर देखती है तब कुछ क्षण के लिए उसके काम में रुकावट पैदा होती है, लेकिन वह पुनः पत्थर तोड़ने लगती है। उसकी आँखों से कवि को अद्‌भुत संगीत सुनाई पड़ता है साथ ही साथ उन आँखों में उन्हें पीड़ा और विवशता भी दिखाई देती है। उसके माथे से गिरनेवाली पसीने की बूँदे उसकी विवशता को प्रकट करती है। भारी हथौड़े से पत्थरों पर प्रहार करने वाली मजदूरनी मानो समाज में विद्यमान वर्ग वैषम्य पर प्रहार करती है। कवि निराला ने गरीब मजदूरों की यथार्थ तस्वीर को प्रस्तुत किया है।

लघु प्रश्न

1. 'छिन्न तार' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

2. ' जो मार खा रोई नहीं का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

3. 'गर्द चिनगी छा गई' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

4. मजदूरनी कहाँ पत्थर तोड़ती है।

5. 'नत नयन प्रिय कर्म रत मन 'का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

6. 'सजा सहज सितार का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

7. 'उस भवन की ओर देखा'—इस पंक्ति में किसके देखने की ओर संकेत किया गया है?

8.'सामने तरूमालिका अट्टालिका प्राकार ' का अर्थ लिखिए।

9. 'जिसके तले बैठी स्वीकार'— कौन किसके तले बैठा है और उसे क्या स्वीकार है?

10. 'सजा सहज सितार' का अर्थ लिखिए।

11. 'देखकर कोई नहीं देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं '— इस पंक्ति में 'मुझे' से किसकी ओर संकेत किया गया है?

12. 'तोड़ती पत्थर' कविता का प्रकाशन—काल लिखिए।

<u>वृहद प्रश्न—</u>

1..'तोड़ती पत्थर' कविता के मूल प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

2. 'तोड़ती पत्थर' कविता में वर्णित प्रकृति के स्वरूप पर विचार कीजिए।

पाठ–वह तोड़ती पत्थर

मूल प्रतिपाद्यः

निराला छायावादी कवि हैं। उन्होंने 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में मजदूरनी के माध्यम से भारतीय समाज में विद्यमान आर्थिक विषमता को उजागर किया है। कवि की दृष्टि मजदूरनी पर गई है ,जो इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती है। वह छायाहीन पेड़ के नीचे बैठ कर भारी हथौड़े से बार–बार पत्थर पर प्रहार करती है। उसका रंग सांवला है। उसके सामने वृक्षों से घिरा हुआ महल है जिसके चारो ओर चहारदिवारी है। मजदूरनी बाध्य होकर कठिन काम को करती है।

कवि निराला मजदूरनी के साथ–साथ प्रकृति के कठोर रूप का वर्णन करते हैं।ग्रीष्म ऋतु और दोपहर का समय है। धरती से आसमान की ओ आग की लपटे उठती हैं पर मजदूरनी का मन पत्थर तोड़ने के काम में लीन रहता है। वह जब महल और कवि की ओर देखती है तब कुछ क्षण के लिए उसके काम में रुकावट पैदा होती है, लेकिन वह पुनः पत्थर तोड़ने लगती है। उसकी आँखों से कवि को अद्‌भुत संगीत सुनाई पड़ता है साथ ही साथ उन आँखों में उन्हें पीड़ा और विवशता भी दिखाई देती है। उसके माथे से गिरनेवाली पसीने की बूँदे उसकी विवशता को प्रकट करती है। भारी हथौड़े से पत्थरों पर प्रहार करने वाली मजदूरनी मानो समाज में विद्यमान वर्ग वैषम्य पर प्रहार करती है। कवि निराला ने गरीब मजदूरों की यथार्थ तस्वीर को प्रस्तुत किया है।

लघु प्रश्न

1. 'छिन्न तार' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

2. ' जो मार खा रोई नहीं का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

3. 'गर्द चिनगी छा गई' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

4. मजदूरनी कहाँ पत्थर तोड़ती है।

5. 'नत नयन प्रिय कर्म रत मन 'का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

6. 'सजा सहज सितार का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

7. 'उस भवन की ओर देखा'—इस पंक्ति में किसके देखने की ओर संकेत किया गया है?

8.'सामने तरूमालिका अट्टालिका प्राकार ' का अर्थ लिखिए।

9. 'जिसके तले बैठी स्वीकार'— कौन किसके तले बैठा है और उसे क्या स्वीकार है?

10. 'सजा सहज सितार' का अर्थ लिखिए।

11. 'देखकर कोई नहीं देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं '— इस पंक्ति में 'मुझे' से किसकी ओर संकेत किया गया है?

12. 'तोड़ती पत्थर' कविता का प्रकाशन—काल लिखिए।

<u>वृहद प्रश्न—</u>

1..'तोड़ती पत्थर' कविता के मूल प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

2. 'तोड़ती पत्थर' कविता में वर्णित प्रकृति के स्वरूप पर विचार कीजिए।